भगवान ने संसार से प्रेम क्यों किया?

ईसाई धर्म के मूल में एक गहरा सत्य है: भगवान प्रेम हैं। वे केवल प्रेम दिखाते नहीं हैं—वे स्वभाव से प्रेम हैं। इसका मतलब है कि उनके हर काम की जड़ यही प्रेम है।

1 यूहन्ना 4:16
“और हम जानते हैं कि परमेश्वर का हमारे लिए प्रेम क्या है और
उस पर भरोसा करते हैं। परमेश्वर प्रेम है। जो प्रेम में
रहता है, वह परमेश्वर में रहता है, और परमेश्वर उसी में।”

जब बाइबिल कहती है, “परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया”, तो यह कोई साधारण या सतही प्रेम नहीं है। यह गहरा, बलिदानी और उद्धारकारी प्रेम है, जो उनके स्वभाव से ही निकलता है।

“संसार” का अर्थ क्या है?

यूहन्ना 3:16 में कहा गया कि परमेश्वर ने “संसार” से प्रेम किया। इसका मतलब यह नहीं कि उन्होंने दुनिया के हर पहलू से प्रेम किया—न ही उन पापी व्यवस्थाओं, मूल्यों या समाज के ढांचों से जो उनके विरोधी हैं।

यूहन्ना 7:7
“संसार तुमसे घृणा नहीं कर सकता, परन्तु मुझसे घृणा करता है क्योंकि मैं उसकी बुराई के कामों की गवाही देता हूँ।”

यहाँ “संसार” (ग्रीक: κοσμος, kosmos) मनुष्यों को दर्शाता है—हर जाति, भाषा और राष्ट्र के दोषपूर्ण, टूटे-फूटे लोग। परमेश्वर का प्रेम सबके लिए है, चाहे लिंग, जाति, पृष्ठभूमि या नैतिकता कुछ भी हो। यही उनके प्रेम को समावेशी और अद्भुत बनाता है (तुलनात्मक रूप से देखें: रोमियों 5:8)।

परमेश्वर के बिना हमारी स्थिति

हम अपने अच्छे कर्मों के कारण प्रेम योग्य नहीं थे। बाइबिल कहती है कि हम आध्यात्मिक रूप से मृत थे और पाप के बंदी थे। हम परमेश्वर से अलग थे, बिना आशा के, और शैतान के प्रभाव में थे।

इफिसियों 2:1–3
“और तुम, जो पहले अपने अपराधों और पापों में मृत थे… जैसे अन्य लोग, हम स्वभाव से क्रोध के अधिकारी थे।”

फिर भी, परमेश्वर ने हमें नहीं छोड़ा। वे दया से प्रेरित हुए और उन्होंने कदम उठाया।

प्रेम का परम कार्य: यीशु मसीह

परमेश्वर के प्रेम की कीमत थी—उन्होंने सब कुछ दे दिया। उन्होंने अपना एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह, भेजा। यीशु संसार में आए, एक पूर्ण जीवन जिया, और हमारे पापों के लिए अंतिम बलिदान के रूप में मर गए।

यूहन्ना 3:16
“क्योंकि परमेश्वर ने संसार से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश
न हो, बल्कि अनन्त जीवन पाए।”

यह केवल उद्धार का अभियान नहीं था—यह हमारे और परमेश्वर के बीच सुलह का मार्ग था। यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से पाप का दंड चुका दिया गया और जो कोई विश्वास करता है, उसके लिए अनन्त जीवन उपलब्ध हुआ।

रोमियों 6:23
“क्योंकि पाप का दंड मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का उपहार
हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।”

पर हर कोई इस उपहार को स्वीकार नहीं करता

उद्धार एक मुफ्त उपहार है, लेकिन कई लोग इसे अस्वीकार करते हैं। क्यों? क्योंकि लोग अंधकार से प्रेम करते हैं—वे अपने पाप नहीं छोड़ना चाहते और न ही प्रभुत्व सौंपना चाहते।

यूहन्ना 3:19
“यह निर्णय है: प्रकाश संसार में आया, पर लोग अंधकार से
प्रेम करने लगे, क्योंकि उनके कर्म बुरे थे।”

कुछ लोग सोचते हैं कि धर्म, नैतिकता या अच्छे कर्म उन्हें बचाएंगे। लेकिन बाइबिल स्पष्ट है: उद्धार विश्वास के द्वारा, अनुग्रह से होता है, कर्मों से नहीं।

इफिसियों 2:8–9

“क्योंकि आप विश्वास के द्वारा अनुग्रह से उद्धार पाए
हैं—और यह आपके अपने नहीं, यह परमेश्वर का उपहार है—कर्मों
से नहीं, ताकि कोई घमंड न कर सके।”

आपका उत्तर मायने रखता है

तो मैं आपसे सीधे पूछता हूँ: क्या आपने यह अनन्त जीवन का उपहार स्वीकार किया है?
केवल यीशु पर विश्वास करना पर्याप्त नहीं है। आपको उन पर भरोसा करना, अपना जीवन उन्हें सौंपना, और उन्हें प्रभु और उद्धारक के रूप में अनुसरण करना होगा।

रोमियों 10:9
“यदि तुम अपने मुख से कहो, ‘यीशु प्रभु हैं,’ और अपने हृदय में विश्वास करो कि परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जीवित
किया, तो तुम उद्धार पाओगे।”

यह संसार अस्थायी है, और किसी को कल का वचन नहीं है। इस निर्णय को मत टालिए।

अपने हृदय को खोलो। यीशु पर भरोसा करो। अनन्त जीवन स्वीकार करो।

शालोम (आप पर शांति हो)।
भगवान का प्रेम केवल शब्दों में नहीं, बल्कि यीशु मसीह की परिवर्तनकारी शक्ति में अनुभव करें।

Share on:
WhatsApp